मुक्तिदूत

प्रथम सर्ग

प्रथम सर्ग में महात्मा गांधी के चरित्र की महानता का वर्णन किया गया है। कवि ने महात्मा गांधी को अवतार के रूप में स्वीकार किया है। गांधीजी भारतवर्ष के ही नहीं, अपितु विश्व के संकट का निवारण करने के लिए उसी प्रकार अवतरित हुए जिस प्रकार राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, ईसा, मुहम्मद साहब, गुरु नानक आदि महापुरुष भगवान् के रूप में अवतरित हुए। जिस प्रकार लिंकन ने अमेरिका का और नेपोलियन ने फ्रांस का उद्धार किया था, उसी प्रकार गांधीजी ने भारतवर्ष को शताब्दियों पुरानी गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराया था।

गांधीजी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता का नाम श्री करमचन्द गांधी था। गांधीजी के जीवन पर उनकी माता के चरित्र की गहरी छाप थी। बचपन में ही सत्यवादी हरिश्चन्द्र तथा श्रवण कुमार के आदर्श चरित्र से गांधीजी बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। गांधीजी को 'हरिजन' तथा 'हिन्दुस्तानी' दोनों से अगाध प्रेम था। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

तुम तो सदा यही कहते थे, मुझको हैं सब एक समान।
कैसे दिव्य नयन ये मेरे, दोनों—हरिजन, हिन्दुस्तान।।

वे तीस वर्षों तक अनगिनत समस्याओं से जूझते रहे। उनके अथक प्रयासों से ही भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकी।

द्वितीय सर्ग

खण्डकाव्य के मूल कथानक का विकास द्वितीय सर्ग में ही हुआ है। एक बार गांधीजी ने स्वप्न में अपनी माता को देखा, जिससे गांधीजी को अपनी माता द्वारा दी गई समस्त शिक्षाएँ याद हो आईं। उनकी माता ने उन्हें समझाया था कि ठोकर खाते हुए को सहारा दो तथा देश के भूखे व्यक्तियों को भोजन दो। माता की वाणी गांधीजी के हृदय को स्पर्श कर गई। उन्होंने मन-ही-मन संकल्प किया कि वे देश के दीन-हीन व्यक्तियों को सहारा देंगे और अपनी जन्मभूमि के बन्धन काट डालेंगे। उनके मन में कुछ आदर्श विचार इस प्रकार उत्पन्न हुए—''सभी भारतवासी उनके सगे भाई हैं। यदि देश का एक भी बालक नंगा-भूखा है तो मुझे सुख किस प्रकार मिल सकता है? अछूतों को भी उसी ईश्वर ने पैदा किया है। इन अछूतों ने उच्च वर्णों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है, फिर इनके प्रति भेदभाव कैसे रखा जा सकता है? निम्न जाति में पैदा हुए 'सत्यकाम' को जब गौतम ऋषि शिक्षा दे सकते हैं और शबरी को भगवान् राम स्वयं अपना प्रेम अर्पित कर सकते हैं तो फिर इन हरिजनों को हृदय से किस प्रकार अलग किया जा सकता है?''

कुलगुरु वसिष्ठ जैसा ज्ञानी, खुद ही निषाद से लिपट गया।
हरिजन शबरी के बेरों से, भरपेट राम ने निपट लिया।।

गांधीजी विचार करते हैं कि समाज में व्याप्त भेदभाव की भावना को मिटाना ही होगा। निर्धन और धनवान् का भेद ईश्वर द्वारा नहीं, हमारा बनाया हुआ है। यदि किसी हरिजन के मन्दिर में प्रवेश करने से मन्दिर अपवित्र हो जाता है तो उस मन्दिर में भगवान् का वास नहीं हो सकता। यही सोचकर गांधीजी ने हरिजनों को भी अपने आश्रम में रहने का निमन्त्रण दिया। गांधीजी के इस कार्य की यह प्रतिक्रिया हुई कि जनता ने आश्रम को चन्दा देने से इनकार कर दिया। आश्रम के प्रबन्धक मगनलाल के निराशाजनक शब्दों को सुनकर गांधीजी क्रोधित हो उठे। उनके मन में अभी अफ्रीका में हुए अपमान की याद शेष थी, जहाँ काले-गौरे और ऊँच-नीच का भेदभाव व्याप्त था। गांधीजी ने कहा कि यदि जनता आश्रम के लिए चन्दा नहीं देती तो मैं हरिजनों की बस्ती में ही रह लूँगा, पेड़ के नीचे सो लूँगा, परन्तु मैं आदमी-आदमी में भेद नहीं कर सकता। मेरे जीते-जी घृणा और द्वेष की आँधी नहीं चल सकती। पहले देश स्वतन्त्र हो जाए, फिर मैं हरिजन-समस्या का भी निवारण करूँगा। गांधीजी के इस कथन से आश्रमवासियों में नवीन चेतना जाग्रत हुई। वे गांधीजी के असाधारण गुणों से भी परिचित हुए। एक बार गांधीजी ने स्वप्न में गोपालकृष्ण गोखले को देखा। गोखले ने गांधीजी को स्वतन्त्रता के मार्ग पर निरन्तर चलने की प्रेरणा दी। गोखले ने आशा प्रकट की कि गांधीजी ही भारतवर्ष के मुक्तिदूत बनेंगे। गांधीजी ने भी देश की स्वतन्त्रता के लिए मर-मिटने के दृढ़ संकल्प को एक बार फिर मन-ही-मन में दोहराया।

तृतीय सर्ग

इस सर्ग में भारत की दुर्दशा और अंग्रेजों के अत्याचारों का वर्णन विस्तार से किया गया है। देश में अंग्रेजों का शासन था। भारतवासी अपमान का जीवन जी रहे थे। केवल वही लोग सुखी थे जो अंग्रेजों के चाटुकार थे। गांधीजी ने भारत की दुर्दशा को ठीक प्रकार से समझा। उन्होंने अंग्रेजों के प्रति पहले तो नम्रता की नीति अपनाई; किन्तु अंग्रेजों का हृदय बदलता हुआ न देखकर उन्होंने उनके विरुद्ध 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' चलाया। इसी समय विश्वयुद्ध छिड़ गया। गांधीजी को यह आशा थी कि विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने से उनके मन में भारतीयों के प्रति अधिक सहानुभूति उत्पन्न हो जाएगी; अतः उन्होंने देशवासियों से अंग्रेजों की सहायता करने का आह्वान किया। परन्तु युद्ध में जीतने के बाद अंग्रेजों ने भारतीयों पर और अधिक अत्याचार किए। अंग्रेजों द्वारा बनाए हुए 'काले कानून' का गांधीजी ने विरोध किया—

'कर शंखनाद सेनापति ने, सोए भारत को जगा दिया।'

उनके साथ देश के अनेक महान् नेता—जवाहरलाल नेहरू, बालगंगाधर तिलक, महामना मदनमोहन मालवीय, जिन्ना, पटेल आदि भी संघर्ष में कूद पड़े। इन्हीं दिनों जलियाँवाला बाग की अमानवीय घटना घटित हुई। अंग्रेजों ने निरपराध भारतवासियों को बन्दूक की गोलियों से भून डाला। वैशाखी के अवसर पर अमृतसर के जलियाँवाला बाग में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक प्रस्ताव पारित करने के लिए जनता एकत्र हुई। तभी अचानक जनरल डायर ने वहाँ आकर निहत्थी जनता पर गोलियों की बौछार करा दी और बाग में सर्वत्र खून-ही-खून हो गया। इसका वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है—

'यह बाग खून में नहा चुका।'

इस हृदय-विदारक घटना से गांधीजी का हृदय रोष से भर गया। अब उन्होंने यह अच्छी तरह से समझ लिया कि भारतवर्ष में अंग्रेज जाति अधिक दिनों तक नहीं रह सकती।

चतुर्थ सर्ग

इस सर्ग में गांधीजी द्वारा चलाए गए अनेक आन्दोलनों का वर्णन किया गया है। अगस्त 1920 ई० में गांधीजी ने '**असहयोग आन्दोलन**' प्रारम्भ किया, जिसे कवि ने संगर (संग्राम) की संज्ञा से अभिहित करते हुए लिखा है—

नवयुग का शुभ आरम्भ हुआ
गांधी संगर में कूद पड़े।
अब राजनीति की देहरी पर
सीधे तनकर हो गए खड़े।।

जनता ने विदेशी सामान का बहिष्कार किया, अंग्रेजों द्वारा दी गई उपाधियों को लौटा दिया तथा नौकरियों को छोड़ दिया। इस प्रकार सारा देश गांधीजी के पीछे आँख मूँदकर चल पड़ा—

जिस ओर बढ़े पग गांधी के
उस ओर समूचा देश बढ़ा।
जो बात कढ़ी उनके मुँह से
बस, उसी बात पर देश अड़ा।।

इस असहयोग आन्दोलन को देखकर अंग्रेजों को बड़ी निराशा हुई। गांधीजी ने **'साइमन कमीशन'** का भी विरोध किया। इसी आन्दोलन में पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय व नेताजी सुभाष भी सम्मिलित हो गए—

पंजाब केसरी तड़प उठा साइमन कमीशन पीछे जा।
नेता सुभाष फिर गरज उठा साइमन कमीशन पीछे जा।।

अंग्रेजों के अत्याचारों के विरोध में भारतीयों के द्वारा किए गए इस तिरस्कार के परिणामस्वरूप अंग्रेज हिंसा पर उतर आए। सम्पूर्ण देश में हिंसक क्रान्ति प्रारम्भ हो गई। गांधीजी ने भारतीय जनता को समझाया और उसे अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने 'नमक कानून' तोड़ने के लिए **'डाण्डी-यात्रा'** की। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद सम्पूर्ण देश में **'सत्याग्रह आन्दोलन'** छिड़ गया। कुछ दिनों बाद गांधीजी ने **''अंग्रेजो, भारत छोड़ो''** आन्दोलन आरम्भ किया। उनका यह नारा सम्पूर्ण देश में गूँज उठा। इस आन्दोलन में विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई, थानों में आग लगा दी गई, रेलवे लाइनों को उखाड़ फेंका गया और सड़कों तथा पुलों को तोड़ दिया गया। इस समय अंग्रेजों का दमन-चक्र भी समस्त सीमाओं को पार कर गया था। गांधीजी ने मृत्यु की परवाह किए बिना बलिदान के लिए जनमानस का आह्वान किया—

मरने की चाह जिन्हें होती, जीने की कला वही जानें।
जीने की चाह जिन्हें केवल, वे कायर मरना क्या जानें।।

गांधीजी ने अनशन प्रारम्भ कर दिया। इसी समय कारावास में बन्द उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा की मृत्यु हो गई। गांधीजी इस आघात से क्षण भर के लिए व्याकुल अवश्य हुए, परन्तु पत्नी के स्वर्गवास ने अंग्रेजों के विरुद्ध उनके मनोबल को और अधिक दृढ़ कर दिया। वस्तुत: यह सर्ग गांधीजी के कर्मयोग अथवा उनकी देन का प्रतीक है, जिसका वर्णन कवि ने इन पंक्तियों में किया है—

सघन तम को करके विच्छिन्न,
भुवन को दे, दिनभर उजियार।

पंचम सर्ग

खण्डकाव्य के पंचम सर्ग में अंग्रेजों की निराशा का वर्णन किया गया है। 1945 ई० में द्वितीय महायुद्ध के समाप्त हो जाने पर विश्व की राजनीति में भी परिवर्तन हुआ। इंग्लैण्ड में चुनाव हुए और वहाँ मजदूर दल की सरकार बनी। इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री **एटली** ने घोषणा की कि जून 1947 ई० से पूर्व ही अंग्रेज भारत छोड़ देंगे। इस सूचना से सम्पूर्ण देश में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, परन्तु इसी समय अंग्रेजों के षड्यन्त्र और मुस्लिम लीग की हठधर्मिता से पाकिस्तान बनाने की बात भी सामने आई। मुहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान बनाने की बात पर अड़े रहे। परिणाम यह हुआ कि 15 अगस्त, 1947 ई० को स्वतन्त्रता-प्राप्ति के साथ-साथ देश दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। नोआखाली में हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़क उठे। इससे गांधीजी को बड़ा दु:ख हुआ। उन्होंने साम्प्रदायिक दंगों को शान्त करने का भरसक प्रयत्न किया।

इस प्रकार भारतवर्ष के स्वाधीनता संग्राम का अन्त तो हुआ, परन्तु देश के विभाजन से गांधीजी को बहुत दु:ख हुआ। उन्होंने देश की बागडोर जवाहरलाल नेहरू के हाथों में सौंपकर सन्तोष की साँस ली।

खण्डकाव्य के अन्त में गांधीजी साबरमती आश्रम में बैठकर देश के प्रति किए गए अपने महान् कार्यों का विश्लेषण करते हुए दिखाए गए हैं। वे भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और इसी के साथ खण्डकाव्य की कथा भी समाप्त हो जाती है—

रहो खुश मेरे हिन्दुस्तान !
तुम्हारा यम हो मङ्गलमूल।
सदा महके बन चन्दन चारु
तुम्हारी अँगनाई की धूल।।